Class Notes **B.A. Geography Part-2, Paper-IV, Unit-III**

स्वेज नहर व्यापारिक मार्ग

Suez Canal Trade Route

बोलेंद्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक, भूगोल,
राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान

स्वेज नहर एक मानव निर्मित नहर है जो भूमध्य सागर और लाल सागर को आपस में जोड़ती है । यह नहर पूरे विश्व के लिए एक छोटा व्यापारिक मार्ग उपलब्ध कराता है । इस नहर के बनने से यूरोप और एशियाई देशों के बीच व्यापार में आशातीत प्रगति हुआ है ।

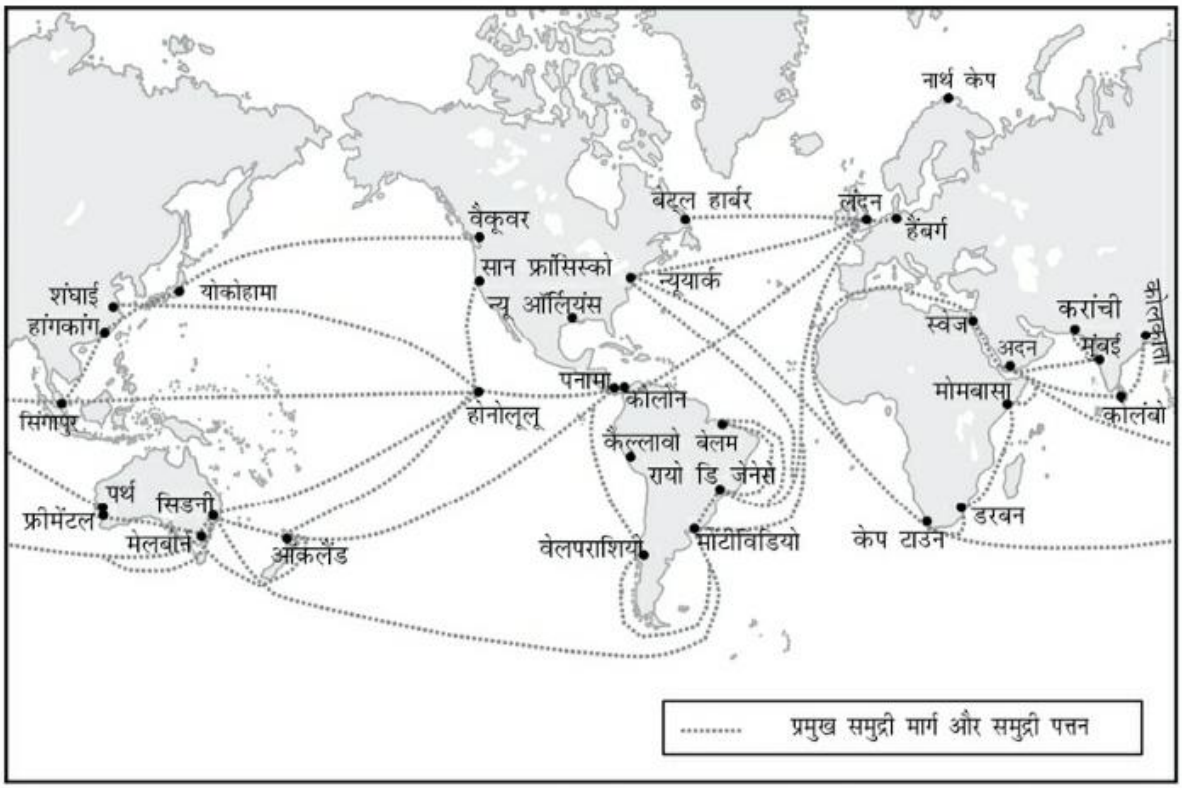

चित्र: एन सी ई आर टी - विश्व के प्रमुख जलमार्ग

नहर का निर्माण

स्वेज नहर का निर्माण सन 1859 में एक फ्रांसीसी इंजीनियर फर्डिनेंड ने शुरू किया था। इसके बनने और शुरू होने में लगभग 10 साल लग गए थे । यातायात के लिए यह 1869 में खोला गया । इस नहर के

बनने में लगभग 1,20,000 मजदूर हैजा और अन्य बीमारियों से काल कवलित हो गए थे अर्थात यह बहुत ही त्याग और तपस्या से बनी थी ।

<u>नहर की संरचना</u>

यह नहर 168 किलोमीटर लंबा, 60 मीटर चौड़ा और 10 से 15 मीटर गहरी है । इस नहर के भूमध्य सागर वाले उत्तरी छोर पर पोर्ट सईद तथा लाल सागर वाले दक्षिणी छोर पर पोर्ट तौफीक, स्वेज स्थित है ।

<u>जहाजों का परिचालन</u>

नहर को 1869 में यातायात के लिए खोल दिया गया । शुरू में सिर्फ दिन में ही जहाज नहर को पार करते थे परंतु 1888 से रात में भी पार होने लगे । 1866 में इस नहर के पार होने में 36 घंटे समय लगते थे परंतु आज सिर्फ 10 से 12 घंटे का समय लगता है । इस नहर में प्रतिदिन 24 जलयान ही आवागमन कर सकते हैं । जलयानों की चाल 11 से 15 किलोमीटर प्रति घंटा के बीच होती है । इससे ज्यादा गति होने पर नहर के दोनों किनारों को नुकसान पहुंचने का डर रहता है ।

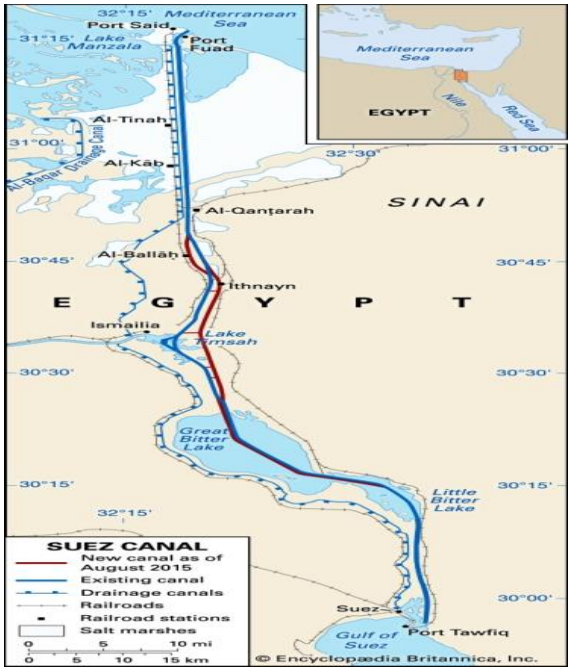

चित्र: ब्रिटानिका.कॉम

<u>स्वेज नहर से लाभ</u>

स्वेज नहर के पहले यूरोप से आने वाले जहाजों को उत्तमाशा अंतरीप का चक्कर लगाना पड़ता था जो काफी लंबी दूरी वाला है । अब उन्हें भूमध्य सागर से होकर स्वेज नहर होते हुए लाल सागर में प्रवेश करना पड़ता है जो अपेक्षाकृत एक बेहद छोटा मार्ग है । स्वेज नहर मार्ग के कारण यूरोप से एशिया और पूर्वी अफ्रीका का सीधा मार्ग खुल गया है और इससे लगभग 6000 मील की दूरी की बचत होती है । इसके कारण अनेक देशों, पूर्वी अफ्रीका, इरान, अरब, भारत, पाकिस्तान, सुदूर पूर्व एशिया के देशों ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि देशों के साथ व्यापार में बड़ी सुविधा हुई है और व्यापार बहुत बढ़ गया है । यह नहर बन जाने से यूरोप एवं सुदूर पूर्व के देशों के मध्य दूरी काफी कम हो जाती है जैसे कि

लिवरपूल से मुंबई - 7250 किलोमीटर
लिवरपूल से हांगकांग - 4500 किलोमीटर
न्यूयार्क से मुंबई - 4500 किलोमीटर

दूरी कम होने से एशियाई तथा यूरोपीय देशों के व्यापारिक संबंध प्रगाढ़ हुए हैं ।

चित्र स्रोत:https://hindi.theindianwire.com/

स्वेज नहर से होने वाले व्यापार

फारस की खाड़ी के देशों से खनिज तेल

भारत तथा अन्य एशियाई देशों से अभ्रक, लौह अयस्क, मैग्नीज, चाय, कॉफी, जुट, रबड़, कपास, ऊन, मसाले, चीनी, चमड़ा, खाल, सागवान की लकड़ी, सूती वस्त्र, हैंडीक्राफ्ट आदि पश्चिम यूरोपीय देशों तथा उत्तर अमेरिका को भेजी जाती हैं ।

यूरोपीय देशों तथा उत्तर अमेरिका आदि देशों से रासायनिक पदार्थ, इस्पात, मशीन, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, औषधियां, मोटर गाड़ियां, वैज्ञानिक उपकरणों आदि का आयात किया जाता है ।

नहर का स्वामित्व

निर्माण के बाद इस नहर का प्रबंध 'स्वेज कैनाल कंपनी' करती थी जिसमें आधे का शेयर फ्रांस का था और आधे में तुर्की, मिस्र और अन्य अरब देशों के थे । बाद में तुर्की, मिस्र और अन्य अरब देशों का शेयर अंग्रेजों ने खरीद लिया । 1888 के अंतरराष्ट्रीय संधि के अनुसार यह नहर सभी देशों के लिए समान रूप से खोल दिया गया परंतु अंग्रेजों ने 1904 में यह संधि तोड़ दी और बाद में 1956 में मिस्र के राष्ट्रपति कर्नल नासिर ने इस नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया और यह पूर्ण रूप से मिस्र के नियंत्रण में आ गया ।

इस प्रकार स्वेज नहर का विश्व के व्यापार और अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान है । इस नहर के निर्माण से न सिर्फ दूरियां कम हुई है बल्कि व्यापार बढ़ गए हैं ।

चित्र स्रोत: https://www.amusingplanet.com/2018/09/how-war-marooned-15-ships-in-suez-canal.html

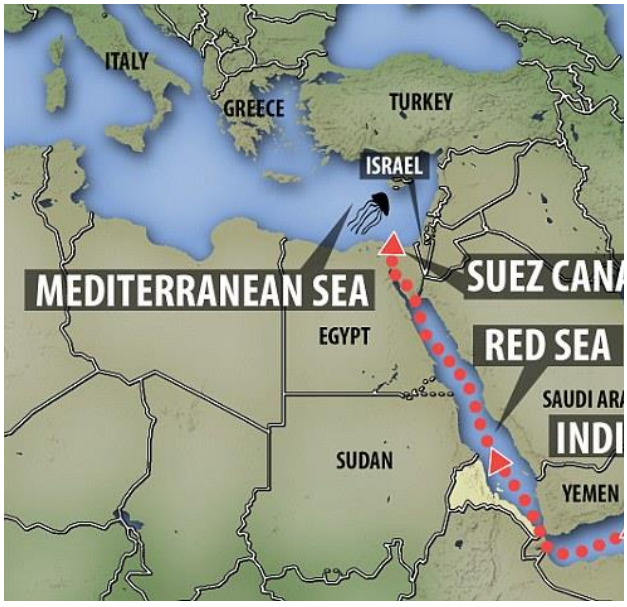

चित्र स्रोत: https://geography.name/suez-canal/

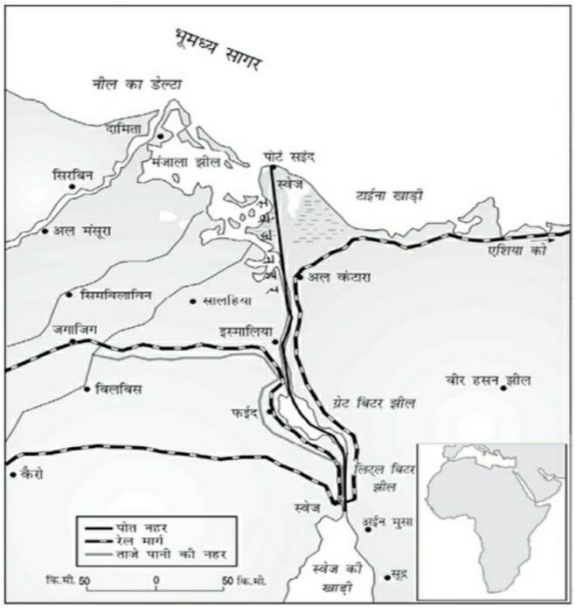

चित्र: एन सी ई आर टी -स्वेज नहर

****

* सन्दर्भ: एनसीईआरटी, विकिपीडिया, इन्टरनेट

****